17 जुलाई 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

राजस्थान के 15 जिलों में अहिंसा शाकाहार रथ प्रवर्तन

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राज. प्रदेश द्वारा दिनांक 29 मई से 12 जून तक निकाला गया अहिंसा शाकाहार रथ प्रवर्तन सानंद संपन्न हुआ।

दिनांक **29 मई को जयपुर से** निकला यह रथ 15 जिलों एवं 75 गांवों में भ्रमण करता हुआ अन्त में कोटा पहुँचा। सभी स्थानों पर रथ का भव्य स्वागत हुआ। रथ का स्वागत जैनों ने ही नहीं; अपितु अजैनों ने भी बहुत उत्साहपूर्वक किया। फैडरेशन के सदस्यों द्वारा सभी स्थानों पर वाहन रैली, जुलूस एवं सभा का आयोजन किया गया। प्रत्येक स्थान पर प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया, जो कि स्थानीय अखबारों में प्रमुखता से प्रकाशित होता था। लगभग 5 हजार कि.मी. का मार्ग तय करने वाले इस रथ प्रवर्तन में 22 विधायक एवं 12 सांसदों ने भी शिरकत की। सभी स्थानों पर ऐसा कोई समाज या वर्ग नहीं था, जिसने यात्रा का स्वागत नहीं किया हो।

दिनांक 29 मई को टोडरमल स्मारक भवन में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं श्री ऋषि बंसल (राज.प्रदेश अध्यक्ष-भा.ज.यु.मो.) की उपस्थिति में अहिंसा शाकाहार रथ का उद्घाटन पूर्व गृहमंत्री एवं विधायक गुलाबचंदजी कटारिया ने किया। यहाँ के कार्यक्रम में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित संजयजी शास्त्री व पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल का विशेष सहयोग रहा।

दिनांक **30 मई को अलवर में** कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बनवारीलालजी सिंघल (विधायक) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री ज्ञानदेव आहूजा (विधायक-रामगढ) थे। मुख्य वक्ता के रूप में श्री बच्चूसिंहजी व श्री खिल्लीमलजी (पूर्व नि:शक्तजन आयुक्त) उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री अजीतजी जैन (प्रदेश उपाध्यक्ष) एवं श्री शशिभूषणजी जैन (प्रदेश प्रचार मंत्री) का विशेष सहयोग रहा।

दिनांक **31 मई को किशनगढ में** अ.भा. विद्यार्थी परिषद के युवाओं द्वारा रथ का भव्य स्वागत किया गया तथा नगर में वाहन रैली निकाली गयी।

दिनांक **1 जून को अजमेर में** महावीर सर्किल, सोनीजी की नसियां, सावित्री कन्या महाविद्यालय आदि स्थानों पर जनसमुदाय को एकत्रित कर शाकाहार और अहिंसा की प्रतिज्ञा दिलवायी गई।

दिनांक **2 जून को पाली में** जैन युवा संगठन द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सम्पतमलजी गांधी (अध्यक्ष-जैनसंघ सभा), पुष्प जैन (पूर्व सांसद), श्री ज्ञानचंदजी पारीख (शहर विधायक) एवं श्री केवलचंदजी गोलेछा (नगरपरिषद अध्यक्ष) उपस्थित थे। सभी ने अपना उद्बोधन देकर और शाकाहार रथ में सम्मिलित होकर सभी कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

दिनांक **3 जून को फालना**-स्वर्ण मन्दिर तथा **रणकपुर** के विश्व प्रसिद्ध जैन मंदिर होता हुआ रथ **राजसमन्द, कांकरोली** पहुँचा।

मावली में जहाँ जैन समाज का एक भी घर नहीं है, वहाँ भी रथ का भव्य स्वागत किया गया तथा रात्रि में सभा आयोजित की गई। यहाँ दिनांक 3 जून को रथ पहुँचना था और समस्त जनसमुदाय द्वारा उस दिन अहिंसा दिवस मनाया गया तथा **मुसलमानों ने भी उस दिन मांसाहार का त्याग किया।** यहाँ के कार्यक्रम में फैडरेशन की संयोजक समता जैन का विशेष सहयोग रहा।

दिनांक **4 जून को भीलवाड़ा** में हुई सभा के मुख्य अतिथि के रूप में श्री विट्ठलशंकरजी अवस्थी (विधायक-भीलवाड़ा), श्री सुभाषजी बहेड़िया (भाजपा-जिला अध्यक्ष) व श्री ओमजी नारायणीवाल (भूतपूर्व सभापति) उपस्थित थे। यहाँ कार्यक्रम में श्री सुकुमालजी चौधरी का विशेष सहयोग रहा।

दिनांक **4 जून** की दोपहर में **चित्तौड़गढ** में अ.भा.विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सम्मेलन में परिषद- अध्यक्ष श्री मिथलेशजी व अन्य विद्यार्थियों द्वारा रथ का स्वागत किया गया। सायंकाल **बेगू** में आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष श्री वृद्धिचंदजी कोठारी (चैयरमेन-बेगू) थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री चुन्नीलालजी धाकड़ (पूर्व राज्यमंत्री) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शांतिलालजी रातड़िया (अध्यक्ष-समस्त ओसवाल जैन समाज), श्री देवीलालजी कोठारी, श्री अशोकजी पाटनी (पार्षद), श्री संजयजी लुहाड़िया (पार्षद), श्री सुरेशचंदजी लुहाड़िया, श्री शांतिलालजी टोंग्या, श्री राकेशजी, श्री जमनालालजी आदि उपस्थित थे। मुख्य वक्ताओं के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री जिनेन्द्र शास्त्री के वक्तव्य हुये। कार्यक्रम में श्री भागचंदजी टोंग्या का विशेष सहयोग रहा।

दिनांक **5 जून** को प्रात: **चित्तौड़गढ** में जैन समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी लोढा (चेयरमैन-नगरपालिका) एवं मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्रसिंहजी (सांसद) उपस्थित थे। इसके पश्चात् रथ **भीण्डर** होते हुए **लूणदा** पहुँचा, जहाँ कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री शंकरलालजी पचौरी एवं मुख्य अतिथि श्री चांदमलजी ललितजी कीकावत थे।

दिनांक **6 जून को रथ उदयपुर पहुँचा,** जहाँ श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर जिनवाणी शोभायात्रा के साथ ही अहिंसा शाकाहार रथ भी निकाला गया। इसी दिन रथ **ऋषभदेवजी, सेमारी, करावली** में भी गया, जहाँ श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभा को सम्बोधित किया। **(शेष पृष्ठ 5 पर...)**

सम्पादकीय – 60

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ९४

विगत गाथा में यह कहा है कि लोक के द्रव्य लोक में रहते हैं। उनका अलोकाकाश में जाने का स्वभाव ही नहीं तथा निमित्तरूप धर्मास्तिकाय अभाव भी है।

अब प्रस्तुत गाथा में आकाश में गति–स्थिति न होने का हेतु बताया है। मूल गाथा इसप्रकार है –

जदि हवदि गमणहेदू आगासं ठाणकारणं तेसिं।
पसजदि अलोगहाणी, लोगस्स य अन्तपरिवुड्ढी।।९४।।

(हरिगीत)

नभ होय यदि गति हेतु अर थिति हेतु पुद्गल जीव को।
तो हानि होय अलोक की अर लोक अन्त नहीं बने।।९४।।

यदि आकाश जीव–पुद्गलों को गमन में हेतु हों और स्थिति में हेतु हो तो अलोक की हानि का और लोक अन्त की वृद्धि का प्रसंग प्राप्त होगा।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि आकाश गति–स्थिति का हेतु नहीं है; क्योंकि लोक और अलोक की सीमा की व्यवस्था इसी प्रकार बन सकती है।

यदि आकाश को ही गति–स्थिति का निमित्त माना जाय तो आकाश का सद्भाव सर्वत्र होने से जीव व पुद्गलों की कोई सीमा न रहने से प्रतिक्षण अलोक की हानि होगी और लोक अन्त भी नहीं बन पायेगा। इसलिए आकाश में गति–स्थिति का हेतुपना सिद्ध नहीं होता।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं कि –

(दोहा)

गमनथान का हेतु जो, होइ आकाश महंत।
तो अलोक की हानि है, लोक बढ़े बिन अंत।।४१२।।

(सवैया इकतीसा)

नहिं है आकास गति–थान का निमित्त यातैं,
लोकालोक सीमा नीकी सदाकाल बनी है।
जौ तौ गति–थान–हेतु कहिए आकास दर्व,
तौ तौ है विरोध बड़ा सीमा सारी भनी है।।
नभ तौ अपार सारै गति–थान कौ निवारै,
कौन अलोक सीमा लोकरूढ़ि हानि है।
छहौं दर्व पावै जहाँ–तहाँ लोक सीमा नाहिं,
भेदज्ञान जाहिं सवै सांची बात मनी है।।४१०।।

कवि का कहना है कि यदि आकाश द्रव्य गमन का निमित्त हो तो अलोकाकाश की हानि होगी और लोक का अन्त नहीं ठहरेगा अर्थात् लोक अनंत मानना पड़ेगा, जो असंभव है। इसलिए आकाश गति, स्थिति का निमित्त नहीं ठहरता। तथा इसी कारण लोकालोक की सीमा बनती है।

इस गाथा के व्याख्यान में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि यदि ऐसा माना जावे कि धर्मद्रव्य तथा अधर्म की क्या जरूरत है, आकाश द्रव्य से ही जीवादि द्रव्यों की गति–स्थिति हो जायेगी ? उनसे कहते हैं कि ऐसा मानने पर अलोकाकाश का नाश होगा तथा लोकाकाश की वृद्धि का प्रसंग प्राप्त होगा।''

तात्पर्य यह है कि आकाश द्रव्य जीव व पुद्गलों की गति में निमित्त नहीं हो सकता; क्योंकि ऐसा होने पर जीव व पुद्गल अलोक में चले जायेंगे। इससे लोक व अलोक की मर्यादा ही भंग हो जायेगी, जोकि अनादि से हैं। तथा जब आकाश द्रव्य में गति–स्थिति में निमित्त होने का गुण ही नहीं है तो निमित्त बनेगा ही कैसे? जबकि निमित्त होने का गुण लोकाकाश में स्थित धर्मद्रव्य एवं अधर्म द्रव्य में है।

इसप्रकार लोक में रहने वाले छहों द्रव्य अलोकाकाश में नहीं जा सकते। ●

गाथा– ९५

विगत गाथा में यह कहा है कि अलोकाकाश में धर्मद्रव्य व अधर्म नहीं हैं। इसकारण सिद्धजीव लोकाग्र में ही ठहरते हैं।

अब प्रस्तुत गाथा में षट्द्रव्य वर्णन के निष्कर्ष के रूप में आ. कुन्दकुन्द स्वयं कहते हैं कि गति और स्थिति के कारण धर्मद्रव्य व अधर्मद्रव्य हैं, आकाश नहीं है। मूल गाथा इसप्रकार है –

तम्हा धम्माधम्मा गमणट्ठिदिकारणाणि णागासं।
इदि जिणवरेहिं भणिदं लोगसहावं सुणंताणं।।९५।।

(हरिगीत)

नभ होय यदि गति हेतु अर थिति हेतु पुद्गल जीव को।
तो हानि होय अलोक की अर लोक अन्त नहीं बने।।९५।।

आचार्य अमृतचन्द्र ने भी इस गाथा की टीका में विशेष कुछ नहीं कहा। मात्र यह कहा कि आकाश द्रव्य में गति–स्थिति हेतुत्व संभव ही नहीं है; क्योंकि उसमें ऐसा कोई गुण ही नहीं है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

तातैं धर्म–अधर्म हैं गति–थिति कारनवन्त।
नहिं आकास जिनकथन यों ग्यानी लखै लसंत।।४१५।।

(सवैया इकतीसा)

धर्मदर्वविषै नीका गति–हेतु बन्या ठीका,
सबतैं विशेष साधै धर्म माहिं गनिए।

ऐसैं ही अधर्म माहिं थान सहकारी गुन,
सबसौं निरारा करै लोक माहिं भनिए।।
यातैं गति–थान–हेतु नभकौ न खेतु सो है,
एक अवकाश तामैं देसदेस चनिए।
ऐसा उपदेस जिनराजकै समाजविषै,
जथाभेद जानैसेती मिथ्यामोह हनिए।।४१६।।

(दोहा)

धर्म–अधर्मविषैं लसै, गति–थिति–हेतु कहान।
और दर्व का गुन नहीं, यहु जिनकथन प्रवान।।४१७।।

उपर्युक्त दोनों दोहों में यह कहा गया है कि धर्मद्रव्य व अधर्म द्रव्य क्रमशः गति व स्थिति में कारण है तथा आकाश द्रव्य में गति–स्थिति में निमित्त बनने का कोई गुण नहीं है।

इस गाथा के प्रसंग में गुरुदेव श्री कानजीस्वामी भी जिनेन्द्र भगवान की साक्षीपूर्वक कहते हैं कि ''भगवान भव्यजीवों को संबोधित करते हुए यह बात सुनाते हैं कि हे भव्य जीवो! जैनदर्शन वस्तुदर्शन है, वह स्वभाव स्वरूप है। आकाश अनन्त द्रव्यों को अवगाहन देने के स्वभाववाला है। धर्मद्रव्य अनन्त जीवों को एवं अनन्तानन्त पुद्गलों को गति में निमित्त होता है। अधर्म अनन्त जीवों व पुद्गलों को गतिपूर्वक स्थिति में निमित्त होता है। काल इन्हीं सबके परिणाम में निमित्त होता है। छहों द्रव्य पूर्ण स्वतंत्र हैं। जो ऐसा ज्ञान करके आत्मा को पर से विभक्तपना एवं स्व से एकत्वपना सिद्ध करता है, वह ज्ञानी है।

जो जीव किसी भी एक द्रव्य को न माने अथवा अन्यथा माने तो वह पर से विभक्त एवं स्व में एकत्व नहीं मानता। जो आगम के अनुकूल नहीं है।''

इसप्रकार गाथा में कहा है कि गति–स्थिति में निमित्त बनने का स्वभाव धर्म व अधर्म द्रव्य है, आकाश में नहीं। यह स्पष्ट किया है। ●

गाथा– ९६

विगत गाथा में जीव व पुद्गलों की गति–स्थिति में धर्म व अधर्म द्रव्य को निमित्त कारणपना बताया है तथा यह भी कहा है इनके सिवाय आकाश द्रव्य में गति–स्थिति में निमित्त होने का गुण ही नहीं हैं।

अब प्रस्तुत गाथा में आकाश द्रव्य में गति–स्थिति हेतुत्व का सहेतु निषेध करते हुए इस प्रकरण का उपसंहार करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

धम्माधम्मागासा अपुधब्भूदा समाणपरिमाणा।
पुधगुवलद्धिविसेसा करेंति एगत्तमण्णत्तं ।।९६।।

(हरिगीत)

धर्माधर्म अर लोक का अवगाह से एकत्व है।
अर पृथक् पृथक् अस्तित्व से अन्यत्व है भिन्नत्व है।।९६।।

धर्म, अधर्म और आकाश समान परिणाम वाले अपृथक्भूत होने से तथा पृथक् उपलब्ध होने से एकत्व तथा अन्यत्व को करते हैं।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि यहाँ धर्म, अधर्म और लोकाकाश का अवगाह की अपेक्षा एकत्व होने पर भी वस्तुरूप से अन्यत्व कहा गया है।

उक्त धर्म, अधर्म व लोकाकाश द्रव्य समान परिमाण वाले होने से एकक्षेत्रावगाह अर्थात् एक साथ रहने मात्र से ही एकत्ववाले हैं। वस्तुतः तो व्यवहार से गति हेतुत्व, स्थिति हेतुत्व और अवगाहन हेतुत्वरूप तथा निश्चय से विभक्त प्रदेशत्व रूप पृथक् उपलब्ध होने की मुख्यता से वे अन्यत्व वाले ही हैं।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं कि –

(सवैया इकतीसा)

धर्माधर्म लोकाकाश तीनौं ए समान देस,
एक खेतवासी तातैं एकभाव भजै हैं।
ऐसा विवहार असद्भूतनय लखाव,
ग्याता जीव लखि जानै मिथ्यामति लजै हैं।।
गति–थान–अवगाह हेतु रूप भिन्न देस,
इतने विशेष सेती न्यारै तीनौ रजै हैं।
निहचै सरूप ऐसा अनुभौ विलास तैसा,
ग्यानी ग्यानभाव जानै ग्येय संग तजै हैं।।४१९।।

यहाँ कवि कहते हैं कि धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य एवं लोकाकाश ये – तीनों एक क्षेत्रवासी होने से एक भावरूप ही हैं, ऐसा असद्भूत व्यवहारनय से कहा है। जीवद्रव्य ज्ञाता हैं – ऐसा जान मिथ्या बुद्धि लज्जित होती है। धर्म, अधर्म व आकाश के क्रमशः गति–स्थिति व अवगाह लक्षण हैं। इतना विशेष जानकर तीनों को प्रथक से कहा है।

इसी गाथा का विशेष स्पष्टीकरण करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ''धर्म, अधर्म एवं लोकाकाश – ये तीनों द्रव्य व्यवहारनय की अपेक्षा एकक्षेत्रावगाही हैं। जहाँ आकाश है, वहीं ये धर्म–अधर्म भी रहते हैं। तीनों के प्रदेश भी असंख्यात ही हैं। तथापि इन्हें निश्चयनय देखें तो जुदे–जुदे हैं। ये अपने स्वभाव से टंकोत्कीर्ण अपनी–अपनी भिन्न–भिन्न सत्ता वाले हैं।''

इसप्रकार इस गाथा में आगम एवं तर्क के आश्रय से धर्म, अधर्म द्रव्य से आकाश की भिन्नता एवं अभिन्नता सिद्ध की है। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

उत्तरप्रदेश में 31 स्थानों पर शिविर

बड़ौत (उ.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल बड़ौत एवं खेकड़ा के तत्त्वावधान में जैन जागृति शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर बड़ौत परमागम मंदिर, गंगेरु, टीकरी, बाबली, खेकड़ा, बागपत, कांधला, सरुरपुर, बिनौली, सरधना, मेरठ, तीरगरान, कंकरखडा, मवाना, कैराना, मुजफ्फरनगर, शामली, सहारनपुर, रामपुर, मनिहारन, खतौली, छपरौली, बुढाना, देवबन्द, धामपुर सराय, हरिद्वार, ऋषिकेश, रुड़की, मैरूत, किरठल आदि जिलों के 31 स्थानों पर लगाया गया।

इस शिविर में पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विकासजी बानपुर, पण्डित कल्पेन्द्रजी खतौली, पण्डित विवेकजी दिल्ली, पण्डित अभिषेकजी दिल्ली, पण्डित श्रेयांसजी दिल्ली, पण्डित विवेकजी सागर, पण्डित कमलेशजी ध्रुवधाम, डॉ. ममता जैन एवं ब्र.सुधाबेन छिन्दवाड़ा आदि विशिष्ट विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित विकासजी इन्दौर, पण्डित आशीषजी सिलवानी, पण्डित मोहितजी नौगांव, पण्डित राहुलजी नौगांव, पण्डित सूरजजी कोल्हापुर, पण्डित सचिनजी, पण्डित आशीषजी, पण्डित विक्रान्तजी भगवां, पण्डित जयेशजी उदयपुर, पण्डित दीपकजी भिण्ड, पण्डित अभिषेकजी सिलवानी, पण्डित अर्पितजी सेमारी, पण्डित संयमजी सिलवानी, पण्डित वैभवजी, पण्डित पलाशजी डडूका, पण्डित पंकजी बकस्वाहा, पण्डित आशीषजी टोंक, पण्डित विश्वासजी बड़ामलहरा, पण्डित अर्पितजी दहेगांव, पण्डित अशोकजी बकस्वाहा, पण्डित गोम्मटेशजी कोल्हापुर, पण्डित जीवेशजी पिड़ावा, पण्डित चेतनजी गोरमी, पण्डित स्वतन्त्रभूषणजी गया, पण्डित दर्शितजी, पण्डित सुमितजी, पण्डित विवेकजी भिण्ड, पण्डित अभिषेकजी सीहोर, पण्डित प्रीतमजी डडूका ध्रुवधाम, पण्डित सुमितजी छिन्दवाड़ा ध्रुवधाम, पण्डित मेघवीरजी घाटोल ध्रुवधाम, पण्डित नीरजजी नौगामा ध्रुवधाम, पण्डित सौरभजी परतापुर ध्रुवधाम, पण्डित सुदीपजी जबेरा ध्रुवधाम, पण्डित रॉकीजी गांधी डडूका ध्रुवधाम, पण्डित अभिषेकजी आंजना ध्रुवधाम, पण्डित नीलेशजी घुवारा ध्रुवधाम, पण्डित अंकितजी खड़ैरी ध्रुवधाम, पण्डित अखिलेशजी घुवारा ध्रुवधाम, पण्डित अखिलेशजी बड़ामलहरा, पण्डित शनिजी खनियांधाना, पण्डित सनतजी बकस्वाहा, पण्डित पंकजजी वमनी, पण्डित आशीषजी औरंगाबाद, पण्डित अभिषेकजी कोलारस, पण्डित अभिनयजी कोटा, पण्डित समकितजी दलपतपुर, पण्डित अनुरागजी बिनौली, पण्डित शुभमजी बिनौली आदि लगभग 58 विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

इस शिविर का उद्घाटन श्री सुरेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी जैन बावलीवालों ने किया। प्रात: भव्य शोभायात्रा निकाली गयी, तत्पश्चात् पण्डित सोनूजी शास्त्री (अधीक्षक–टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर) के प्रवचन का लाभ मिला। सभा की अध्यक्षता श्री राकेशजी बोदी (रूबी एन्टरप्राइजेज) ने की।

शिविर में लगभग 2550 शिविरार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

इस शिविर के आयोजन हेतु कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मुमुक्षु आश्रम कोटा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर पण्डित नागेशजी द्वारा समस्त विद्वानों व प्रभारियों का सम्मान किया गया।

शिविर का समापन समारोह बड़ौत में संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री विनोदकुमारजी जैन (एडवोकेट) ने की। सभा का संचालन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर एवं पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर ने किया।

संपूर्ण शिविर की अध्यक्षता श्री नरेशचंदजी जैन (पारस चैनल) ने की। निर्देशन पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर ने तथा संयोजन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित गौरवजी शास्त्री बावली एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री दिल्ली ने किया।

सामूहिक बाल संस्कार शिविर संपन्न

कारंजा–लाड (महा.) : यहाँ श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम (जैन गुरुकुल) के तत्त्वावधान में महाराष्ट्र के पश्चिमी विदर्भ एवं मराठवाडा विभाग के विभिन्न 19 स्थानों पर दिनांक 1 से 9 जून 2011 तक सामूहिक धार्मिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर वाशिम, शिरपुर, हराल, सेनगांव, कलमनूरी, अंबड, बीड, ढासाला, विहीगांव, अनसिंग, मालेगांव, रिसोड, हिंगोली, परभणी, सेलू, देउलगांवराजा, वरूड (बु.), मलकापुर, मंगरूलपीर आदि 19 स्थानों पर लगाया गया।

इस शिविर में पण्डित निशांतजी पाटिल कोल्हापुर, पण्डित मेघवीरजी जैन घाटोल, पण्डित नीरजजी जैन नौगामा, पण्डित सुकुमालजी पाटील कोल्हापुर, पण्डित अमोलजी हिंगोली, पण्डित सतीशजी जैन कारंजा, पण्डित शैलेषजी जैन उदमोड, पण्डित चिन्मयजी जैन इन्दौर, पण्डित धवलजी जैन उड्डका, पण्डित आत्मप्रकाशजी जैन खड़ैरी, पण्डित चेतनजी जैन मलकापुर, पण्डित राहुलजी जैन खड़ैरी, पण्डित अंकितजी जैन खड़ैरी, पण्डित नीलेशजी जैन धुवारी, पण्डित करणजी जैन येड्राव, पण्डित कुलभूषणजी आंबेकर वडौद, पण्डित शुभमजी जैन अलीगढ, पण्डित अंकितजी जैन रानोली, पण्डित अखिलेशजी जैन घुवारा, पण्डित प्रदीपजी जैन कोल्हापुर, पण्डित दीपकजी जैन सेभारी, पण्डित स्वप्निलजी जैन खडकी (कोल्हापुर) आदि विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

इस सामूहिक शिविर का उद्घाटन हिंगोली में मा.नरेन्द्रजी दोडल हिंगोली द्वारा हुआ।

शिविर में हर स्थान पर लगभग 40 – 70 बालकों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये एवं लगभग 800 शिविरार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

इस शिविर के आयोजन हेतु कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मुमुक्षु आश्रम कोटा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर का समापन समारोह श्री म.ब्र.आश्रम कारंजा–लाड में संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता प्रा.श्री कीर्तिकुमार भोरे नासिक ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती विजयाताई भिसीकर उपस्थित थी।

इस शिविर का निर्देशन श्री भरतभाऊ भोरे कारंजा और श्री प्रमोदभाऊ चवरे ने किया। संयोजन पण्डित आलोकजी शास्त्री, श्री प्रकाशजी टोपरे, पण्डित सतीशजी गवारे कारंजा एवं पण्डित अनेकान्तजी जैन ने किया।

वेदी शुद्धि एवं विधान संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : भोपाल-विदिशा हाईवे रोड़ पर मात्र 30 मिनिट की ड्राइव पर अत्यंत सुरम्य पहाड़ियों की तलहटी में अवस्थित भूमि पर अध्यात्म केन्द्र के रूप में एक संकुल बनने जा रहा है। यहाँ एक भव्य जिनालय, प्रवचन हॉल, विद्यालय, नेचुरलपैथी औषधालय एवं विद्वत् निवास बनाने की योजना प्रस्तावित है। इस प्रांगण में लगभग 100 प्लाट एवं 100 फ्लेटों का निर्माण भी साधर्मी भाईयों द्वारा किया जायेगा। ज्ञातव्य है कि इस योजन के लिये दीवानगंज में 7 एकड़ भूमि की रजिस्ट्री हो चुकी है। इस भूमि पर अस्थायी आकर्षक सुंदर जिनमंदिर बनाकर उसमें वेदी शुद्धि एवं प्रतिमा विराजमान का कार्यक्रम दिनांक 3 जुलाई को संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम के प्रारंभ में कोहेफिजा से दीवानगंज तक शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा को विराजमान कर पंचपरमेष्ठी विधान किया गया।

इस अवसर पर ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित जवाहरलालजी विदिशा, पण्डित चिन्मयजी विदिशा, पण्डित अनुरागजी, ब्र. चन्द्रसेनजी, पण्डित अनिलजी इन्जीनियर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर आदि विद्वानों व गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त कुन्दकुन्द कहान दि.जैन ट्रस्ट दीवानगंज के समस्त ट्रस्टीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम में लगभग 700-800 लोगों ने लाभ लिया तथा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 8 हजार प्रवचनों के लगभग 100 डी.वी.डी. घर-घर पहुँचे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित रमेशचंदजी बांझल के निर्देशन में पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल भोपाल एवं पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न हुये।

इस प्रकार अस्थायी जिनमंदिर बनाकर वेदीशुद्धि का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में सत्र की प्रथम गोष्ठी दिनाँक 3 जुलाई को **'अष्टाह्निका महापर्व : एक अनुशीलन'** विषय पर आयोजित की गई।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. दीपकजी जैन जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सचिन जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं अनुपम जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

आभार प्रदर्शन महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया। गोष्ठी का संचालन वैभव जैन डडूका एवं अभिषेक जैन दिल्ली ने किया। मंगलाचरण अच्युतकांत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

दिनाँक 10 जुलाई को **'पंच परमेष्ठी : एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित संजयजी सेठी, जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रखर जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं विवेक जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) व अर्पित जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

आभार प्रदर्शन टोडरमल महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया। गोष्ठी का संचालन विश्वास जैन एवं उदय जैन चौगुले (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। मंगलाचरण अरविन्द जैन ललितपुर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

दिनांक **7 जून को उदयपुर में** ही भव्य अहिंसा शाकाहार सभा का आयोजन मोहनलाल सुखाड़िया रंगमंच पर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री श्यामजी सिंघवी उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभा को संबोधित किया। यहाँ के कार्यक्रम में पण्डित खेमचंदजी जैन, डॉ. महावीर प्रसादजी जैन, श्री नृपेन्द्रजी जैन, श्री कमलजी भोरावत व श्री अशोकजी गदिया का विशेष सहयोग रहा।

दिनांक **8 जून को रथ बांसवाड़ा** पहुँचा, जहाँ कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महिपालजी ज्ञायक ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री शांतिलालजी, श्री सुमतिलालजी लूणदिया व श्री धर्मेन्द्रजी चंगेरिया थे। यहाँ कार्यक्रम में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री ओजस्वी एवं पण्डित रितेशजी डडूका का विशेष सहयोग रहा।

इसके पश्चात् रथ **साकरोदा** होते हुए दिनांक **9 जून को डूँगरपुर** पहुँचा, जहाँ रथ को वहाँ की मेयर सुशीला भील ने एस्कॉर्ट किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री दिलीपजी नागदा (अध्यक्ष-जैन नवयुवक मण्डल) थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री पूरणमलजी, श्री रोशनलालजी, श्री बदामीलालजी, श्री रमेशचंदजी एवं श्री विनोदजी उपस्थित थे।

दिनांक **10 जून** को आसपुर होते हुए रथ **प्रतापगढ** पहुँचा, जहाँ कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कमलेशजी दोशी (चैयरमेन-प्रतापगढ) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेन्द्रजी बोर्दिया एवं श्री रामलालजी थे। यहाँ कार्यक्रम में श्री सुनीलजी जैन (प्रदेश सहमंत्री) का विशेष सहयोग रहा।

दिनांक **11 जून** को पिड़ावा के कार्यक्रम में श्री राजेन्द्रजी जैन (भूतपूर्व सभापति-नगरपालिका), श्री महावीरजी जैन (भूतपूर्व सभापति-नगरपालिका) श्री प्रभुलालजी सोनी (अध्यक्ष-गायत्री मंदिर), श्री संजयजी राणा (पार्षद), श्री राजेन्द्रजी जैन बना (पार्षद), श्री पारसजी जैन (पार्षद), श्री मुकेशजी मासून (पार्षद) आदि महानुभाव उपस्थित थे।

पाली में 5 मुस्लिम भाइयों ने आजीवन शाकाहार का संकल्प लिया। इसी प्रकार **प्रतापगढ में भी 3 अजैन भाईयों ने आजीवन शाकाहार** का संकल्प लिया।

इस यात्रा में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित पुस्तकें 'अहिंसा' व 'शाकाहार' लगभग 11000-11000 की संख्या में जन-जन तक पहुँची। रथ के प्रमुख सारथी एवं निर्देशक श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (प्रदेश अध्यक्ष) थे।

रथ प्रवर्तन का समापन समारोह - दिनांक 12 जून को कोटा में इस अवसर पर अध्यक्ष के रूप में श्री पंकजजी मेहता (कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता) उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री ओम बिड़ला (विधायक-कोटा दक्षिण) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री हरिओम शर्मा (पूर्व शिक्षामंत्री) उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं अन्य वक्ताओं में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई एवं डॉ. पीयूषजी चतर का मार्मिक उद्बोधन हुआ। इनके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी जैन (राष्ट्रीय सदस्य एवं मुमुक्षु आश्रम निर्देशक), पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री (राष्ट्रीय प्रचारमंत्री), श्री जयकुमारजी बारां, श्री संजयजी जैन दौसा, श्री गजेन्द्रजी जैन भरतपुर, श्री प्रमोदजी जैन टामटिया आदि महानुभावों का भी विशेष सहयोग रहा।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

78 इक्कीसवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जिनोपदेश की कथन शैलियों की बात को आगे बढाते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''जिनमत में उपदेश चार अनुयोग के द्वारा दिया है। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग – यह चार अनुयोग हैं।

वहाँ तीर्थंकर-चक्रवर्ती आदि महान पुरुषों के चरित्र का जिसमें निरूपण किया हो, वह प्रथमानुयोग है। तथा गुणस्थानमार्गणादिरूप जीव का व कर्मों का व त्रिलोकादि का जिसमें निरूपण हो, वह करणानुयोग है। तथा गृहस्थ-मुनि के धर्म आचरण करने का जिसमें निरूपण हो, वह चरणानुयोग है। तथा षट्द्रव्य, सप्ततत्त्वादिक का व स्व-पर का, भेदविज्ञानादिक का जिसमें निरूपण हो, वह द्रव्यानुयोग है।[१]''

साधारण लोगों का मन कथा-कहानियों में ही अधिक लगता है। वे लोग लौकिक कथा साहित्य को पढकर पापभावों का पोषण करते रहते हैं। यही कारण है कि उन्हें प्रथमानुयोग के शास्त्रों में पौराणिक कथाओं के माध्यम से संसार की विचित्रता और पुण्य-पाप का फल बताकर, पाप से बचाकर पुण्यरूप धर्म में लगाया जाता है।

यदि तत्त्वज्ञानी जीव प्रथमानुयोग का स्वाध्याय करें तो उनके लिए ये कथायें उदाहरण के रूप में तत्त्वज्ञान के पोषण में सहयोगी होती हैं।

अनेक भवों की कथायें आत्मा की अनादि-अनंतता का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। वे हमारे चित्त में इस बात को जमा देती है कि आत्मा जन्म के पहले भी था और मृत्यु के बाद भी रहेगा।

आज के कुछ लोग पूर्वभव-परभव संबंधी कथाओं को अनुपयोगी बताते हैं; परन्तु ये कथायें आत्मा की अनादि-अनंतता तो सिद्ध करती ही हैं; हमारे चित्त को भी परिमार्जित करती हैं, साम्प्रदायिकता के जहर को उतारती हैं; जातिवाद, प्रान्तवाद के जहर से बचाती हैं; विभिन्न देशों, विभिन्न जातियों, विभिन्न वर्गों और विभिन्न धर्मों के बीच फैले द्वेषभाव को कम करती हैं, सद्भाव फैलाती हैं।

जब हम पढते हैं कि हिन्दुस्तानी मरकर पाकिस्तान में पैदा हो गया और पाकिस्तानी मरकर हिन्दुस्तान में पैदा हो गया; तो हमें लगता है कि ऐसा हमारे और आपके साथ भी हो सकता है। ऐसी स्थिति में हम किसी देशवासी से राग और किसी देशवासी से द्वेष कैसे कर सकते हैं ?

इसीप्रकार हिन्दू मरकर मुसलमान हो सकता है और मुसलमान मरकर हिन्दू के घर में पैदा हो सकता है तो फिर हम एक धर्म विशेष और उसके अनुयायियों से द्वेष कैसे कर सकते हैं ?

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २६८

जरा, सोचिये तो सही; जो मुसलमान अपने बेटे को यह समझा रहा है कि हिन्दू काफिर होते हैं, उन्हें मारने में कोई पाप नहीं है; कल मर कर यदि वह हिन्दू के घर में पैदा हो गया तो उसका बेटा ही उसे मार डालेगा।

इसीप्रकार किसी हिन्दू ने अपने बेटे को मुस्लिमों के विरुद्ध भड़कया और वह स्वयं मरकर मुस्लिम घर में पैदा हो गया तो फिर उसका बेटा उसके साथ कैसा व्यवहार करेगा ? इसकी भी कल्पना तो की ही जा सकती है।

इसीप्रकार पशु-पक्षियों पर भी घटित किया जा सकता है। जब हम यह समझेंगे कि आदमी मरकर कुत्ता, गधा कुछ भी हो सकता है। इसीप्रकार कुत्ता-गधा भी मरकर आदमी हो सकता है तो फिर हम पशुओं से भी दुर्व्यवहार नहीं कर सकेंगे।

सभी जीवों से साम्यभाव पैदा करनेवाले और मानव जाति को सहिष्णु बनानेवाले ये पूर्वभव-परभव संबंधी कथानक अत्यन्त उपयोगी हैं। इनका बहिष्कार-तिरस्कार करके जो पाप हम करते हैं या करेंगे; उसका कोई प्रायश्चित्त संभव नहीं है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि प्रथमानुयोग के शास्त्र अत्यन्त उपयोगी हैं; क्योंकि इनका पठन-पाठन सामान्यजनों को भी शुद्ध, सात्त्विक, करुणावंत अहिंसक, सदाचारी और सद्व्यवहार करनेवाला बनाता है।

प्रथमानुयोग में मूल कथायें तो जैसी होती हैं, वैसी ही लिखी जाती है; किन्तु प्रसंगोपात्त व्याख्यान ज्यों के त्यों होने के साथ-साथ उनमें लेखक अपने विवेक का भी प्रयोग करता है, किन्तु प्रयोजन तदनुकूल ही रहता है। उक्त बात को उदाहरण के माध्यम से समझाते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''तीर्थंकर देवों के कल्याणकों में इन्द्र आये, यह कथा तो सत्य है। तथा इन्द्र ने स्तुति की, उसका व्याख्यान किया; सो इन्द्र ने तो अन्य प्रकार से ही स्तुति की थी और यहाँ ग्रन्थकर्ता ने अन्य ही प्रकार से स्तुति करना लिखा है; परन्तु स्तुतिरूप प्रयोजन अन्यथा नहीं हुआ।

तथा परस्पर किन्हीं के वचनालाप हुआ; वहाँ उनके तो अन्य प्रकार अक्षर निकले थे, यहाँ ग्रन्थकर्ता ने अन्य प्रकार कहे; परन्तु प्रयोजन एक ही दिखलाते हैं। तथा नगर, वन, संग्रामादिक के नामादिक तो यथावत् ही लिखते हैं और वर्णन हीनाधिक भी प्रयोजन का पोषण करता हुआ निरूपित करते हैं। इत्यादि इसीप्रकार जानना।

तथा प्रसंगरूप कथा भी ग्रंथकर्ता अपने विचारानुसार कहते हैं। जैसे – धर्मपरीक्षा में मूर्खों की कथा लिखी; सो वही कथा मनोवेग ने कही थी, ऐसा नियम नहीं है; परन्तु मूर्खपने का पोषण करनेवाली कोई कथा कही थी – ऐसे अभिप्राय का पोषण करते हैं।

इसीप्रकार अन्यत्र जानना।[१]''

प्रथमानुयोग के कथन आगमप्रमाण के रूप में प्रस्तुत करने के पूर्व

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २७२

यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि उसका मूल प्रयोजन क्या है; क्योंकि उसमें कहीं-कहीं अनुचित बातों की भी प्रशंसा कर दी जाती है; इसका प्रत्येक शब्द केवली भगवान की दिव्यध्वनि से विनिर्गत नहीं है। इस बात को स्पष्ट करते हुए पण्डित टोडरमलजी अनेक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

उक्त संदर्भ में उनका मार्गदर्शन इसप्रकार है -

''तथा प्रथमानुयोग में कोई धर्मबुद्धि से अनुचित कार्य करे, उसकी भी प्रशंसा करते हैं। जैसे - विष्णुकुमार ने मुनियों का उपसर्ग दूर किया, सो धर्मानुराग से किया; परन्तु मुनिपद छोड़कर यह कार्य करना योग्य नहीं था; क्योंकि ऐसा कार्य तो गृहस्थधर्म में संभव है, और गृहस्थधर्म से मुनिधर्म ऊँचा है; सो ऊँचा धर्म छोड़कर नीचा धर्म अंगीकार किया, यह अयोग्य है; परन्तु वात्सल्य अंग की प्रधानता से विष्णु-कुमारजी की प्रशंसा की है। इस छल से औरों को ऊँचा धर्म छोड़कर नीचा धर्म अंगीकार करना योग्य नहीं है।

तथा जिसप्रकार ग्वाले ने मुनि को अग्नि से तपाया, सो करुणा से यह कार्य किया; परन्तु आये हुए उपसर्ग को दूर करे, सहज अवस्था में शीतादिक का परीषह होता है, उसे दूर करने पर रति मानने का कारण होता है, और उन्हें रति करना नहीं है, तब उल्टा उपसर्ग होता है।

इसी से विवेकी उनके शीतादिक का उपचार नहीं करते। ग्वाला अविवेकी ही था, करुणा से यह कार्य किया, इसलिए उसकी प्रशंसा की है; परन्तु इस छल से औरों को धर्मपद्धति में जो विरुद्ध हो, वह कार्य करना योग्य नहीं है।

तथा जैसे - वज्रकरण राजा ने सिंहोदर राजा को नमन नहीं किया, मुद्रिका में प्रतिमा रखी; सो बड़े-बड़े सम्यग्दृष्टि राजादिक को नमन करते हैं, उसमें दोष नहीं है; तथा मुद्रिका में प्रतिमा रखने में अविनय होती है, यथावत् विधि से ऐसी प्रतिमा नहीं होती, इसलिए इस कार्य में दोष है; परन्तु उसे ऐसा ज्ञान नहीं था, उसे तो धर्मानुराग से 'मैं और को नमन नहीं करूँगा' ऐसी बुद्धि हुई है; इसलिए उसकी प्रशंसा की है। परन्तु इस छल से औरों को ऐसे कार्य करना योग्य नहीं है।

तथा कितने ही पुरुषों ने पुत्रादिक की प्राप्ति के अर्थ अथवा रोग-कष्टादि दूर करने के अर्थ चैत्यालय पूजनादि कार्य किये, स्तोत्रादि किये, नमस्कारमंत्र स्मरण किया; परन्तु ऐसा करने से तो नि:कांक्षितगुण का अभाव होता है, निदानबंध नामक आर्तध्यान होता है, पाप ही का प्रयोजन अंतरंग में है, इसलिए पाप ही का बंध होता है; परन्तु मोहित होकर भी बहुत पापबंध का कारण कुदेवादिक का तो पूजनादि नहीं किया, इतना उसका गुण ग्रहण करके उसकी प्रशंसा करते हैं।

इस छल से औरों को लौकिक कार्यों के अर्थ धर्म साधन करना युक्त नहीं है। इसीप्रकार अन्यत्र जानना।[१]''

इसप्रकार प्रथमानुयोग का प्रयोजन और उसके कथन करने की पद्धति का स्वरूप स्पष्ट किया। अब करणानुयोग के संबंध में बात करते हैं।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २७४

करणानुयोग में केवलज्ञानगम्य कथन होता है। इसमें केवली भगवान की दिव्यध्वनि में समागत, जीवों और कर्मों का तथा त्रिलोकादि की रचना का निरूपण करके जीवों को धर्म में लगाया जाता है। **सामान्यजन तो इसके सूक्ष्म प्रतिपादन से प्रभावित होकर धर्ममार्ग में लगते हैं और तत्त्वज्ञानी जीव निश्चय-व्यवहारनय से इसके कथन को यथायोग्य घटित करके अपने श्रद्धान को दृढ करते हैं और उपयोग को निर्मल करते हैं।**

यद्यपि इसमें केवलज्ञान द्वारा जाना और केवलज्ञानी की दिव्यध्वनि में समागत कथन होता है; तथापि उक्त वस्तुस्वरूप का पूरा लिखना तो संभव नहीं होता। अत: जिसप्रकार छद्मस्थों के ज्ञान में उसका भाव भासित हो जावे, उसप्रकार कथन करते हैं।

अपनी बात को स्पष्ट करते हुए पण्डितजी लिखते हैं -

''जीव के भावों की अपेक्षा गुणस्थान कहे हैं, वे भाव अनन्त-स्वरूपसहित वचन-गोचर नहीं है, वहाँ बहुत भावों की एक जाति करके चौदह गुणस्थान कहे हैं। तथा जीवों को जानने के अनेकप्रकार हैं, वहाँ मुख्य चौदह मार्गणा का निरूपण किया है।

तथा कर्मपरमाणु अनन्त प्रकार शक्तियुक्त हैं, उनमें बहुतों की एक जाति करके आठ व एक सौ अड़तालीस प्रकृतियाँ कही हैं।

तथा त्रिलोक में अनेक रचनाएँ हैं, वहाँ कुछ मुख्य रचनाओं का निरूपण करते हैं।

तथा प्रमाण के अनन्त भेद हैं, वहाँ संख्यातादि तीन भेद व इनके इक्कीस भेद निरूपित किये हैं। इसीप्रकार अन्यत्र जानना।[१]''

इसप्रकार हम देखते हैं कि करणानुयोग में चौदह गुणस्थान, चौदह मार्गणायें, कर्म के ज्ञानावरणादि आठ मूल भेद एवं एक सौ अड़तालीस उत्तर प्रकृतियाँ, त्रिलोक की मुख्य रचनायें एवं संख्या के संख्यात आदि तीन मूल भेद और इनके इक्कीस भेदों की चर्चा होती है।

उक्त कथन तो सर्वज्ञकथित होने से वस्तुपरक है; किन्तु करणानुयोग में कहीं-कहीं उपदेश की मुख्यता से भी व्याख्यान होता है।

उक्त कथन के संबंध में टोडरमलजी का मार्गदर्शन इसप्रकार है -

''तथा करणानुयोग में भी कहीं उपदेश की मुख्यता सहित व्याख्यान होता है, उसे सर्वथा उसीप्रकार नहीं मानना।

जैसे - हिंसादिक के उपाय को कुमतिज्ञान कहा है; अन्य मतादिक के शास्त्राभ्यास को कुश्रुतज्ञान कहा है; बुरा दिखे, भला न दिखे, उसे विभंगज्ञान कहा है; सो इनको छोड़ने के अर्थ उपदेश द्वारा ऐसा कहा है। तारतम्य से मिथ्यादृष्टि के सभी ज्ञान कुज्ञान हैं, सम्यग्दृष्टि के सभी ज्ञान सुज्ञान हैं। इसीप्रकार अन्यत्र जानना।

तथा कहीं स्थूल कथन किया हो उसे तारतम्यरूप नहीं जानना। जिसप्रकार व्यास से तीन गुनी परिधि कही जाती है, परन्तु सूक्ष्मता से कुछ अधिक तीन गुनी होती है। इसीप्रकार अन्यत्र जानना।[२]''

इसप्रकार करणानुयोग का प्रयोजन और उसके कथन करने की पद्धति का स्वरूप कहा। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २७५ २. वही, पृष्ठ २७७

17 जुलाई 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

सार समाचार -

- डीजल और रसोई गैस के दामों में बढोतरी पर देशभर में कोहराम।

- डीजल की कीमतों में वृद्धि के कारण मालभाड़ा में अलग-अलग संगठनों ने 4-10 प्रतिशत तक बढोतरी के संकेत दिये हैं।

- पूर्व नौकरशाहों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है, जिसमें हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश भी साथ आ गए हैं। इन्होंने दिनांक 25 जून को एसीबी के साथ भ्रष्टाचार पर रोकथाम के मुद्दे पर चर्चा की।

- गांधीवादी नेता अन्ना हजारे ने दिनांक 16 अगस्त को अनशन पर बैठने की घोषणा की।

- प्रथम महिला आई. पी. एस. अधिकारी किरण बेदी ने कहा है कि भ्रष्टाचार से भारत को प्रतिवर्ष 16 अरब डॉलर का नुकसान होता है।

- महाराष्ट्र सरकार ने अपनी नई शराब नीति के तहत 25 वर्ष से कम उम्र के युवाओं के लिए शराब खरीदने और पीने को गैरकानूनी बना दिया है। राज्य में फिलहाल शराब पीने की वैध उम्र 21 वर्ष है। साथ ही सार्वजनिक कार्यक्रमों एवं समारोहों में शराब परोसने पर पाबंदी लगा दी गई है।

- मॉस्को में एक जर्मन नागरिक क्रिस्टियन टेक्नोफर ने मेंढक के टर्राने पर एयरगन से उसकी हत्या कर दी, जिससे उस व्यक्ति पर 1500 यूरो का जुर्माना लगाया गया।

- बिहार के बांका जनपद के डीह नामक गांव में नई दुल्हन को तभी प्रवेश मिलता है जब वह शाकाहारी हो अथवा आजीवन शाकाहार की प्रतिज्ञा लेवे।

मांसाहार का विज्ञापन ठुकराया

फिल्म अभिनेत्री करीना कपूर ने हाल ही में एक चिकन प्रोडक्ट बनाने वाली एक कम्पनी के ब्रांड एम्बेस्डर बनने का छ: करोड़ के विज्ञापन का प्रस्ताव ठुकरा दिया है। ज्ञातव्य है कि करीना कपूर ने दो वर्ष पहले मांसाहार का पूर्णतया त्याग कर शाकाहार अपना लिया था।

चोरी हुई प्रतिमाएं मिली

सेमारी (उदयपुर) : यहाँ दिनांक 18 जून को दि. जैन मंदिर से 185 वर्ष प्राचीन 7 प्रतिमाएं, चार चाँदी के छत्र, तीन सिंहासन चोरी हो गये।

अ.भा.जैन युवा फै.राज.प्रदेश के अध्यक्ष श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने उदयपुर आई.जी. श्री गोविन्दजी गुप्ता को फोन पर चोरी का घटनाक्रम बताया। युवा फैडरेशन सेमारी ने प्रशासन को चार दिन का अल्टीमेटम दिया। मूर्तियाँ न मिलने पर दिनांक 22 जून को पूरा गांव बंद रहा एवं उपवास किया। परिणामस्वरूप अज्ञात चोरों ने 6 प्रतिमाओं को खेतों में डाल दिया।

अभी पार्श्वनाथ भगवान एक प्रतिमा, छत्र व सिंहासन प्राप्त नहीं हुये हैं। इस कारण युवा फैडरेशन शाखा सेमारी ने दिनांक 5 जुलाई को सेमारी एवं सराड़ा तहसील बंद का आह्वान किया। प्रशासन इस घटनाक्रम से इतना हतप्रभ था कि सेमारी गांव छावनी में तब्दील हो गया। वहाँ ससंघ विराजमान प्रकाशमती माताजी ने सभा को संबोधित करते हुए युवा फैडरेशन की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि हमें इस मुद्दे पर पंथ आदि को छोड़कर एक मंच पर आना चाहिये।

पक्षियों को पिंजरों में न रखा जाए - हाईकोर्ट

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ गुजरात हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस एम. आर. शाह ने एक निर्णय में कहा कि निर्दोष पक्षियों एवं प्राणियों को मुक्त रूप से विचरण करने का अधिकार है। पशु-पक्षियों को कैद करके रखना प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध कार्य है।

सूरत के एक व्यापारी के यहाँ 494 पक्षियों एवं पशुओं को निर्दयतापूर्वक कैद करके रखा गया था। जस्टिस शाह ने इन्हें तत्काल प्रभाव से मुक्त करने का आदेश दिया है। अपने निर्णय में न्यायाधीश ने प्रीवेन्शन ऑफ क्रूअल्टी टू एनिमल एक्ट 1960 का हवाला देते हुए इस व्यापारी के आवेदन को खारिज कर दिया।

आंध्रप्रदेश में जैन समुदाय अल्पसंख्यक घोषित

आंध्रप्रदेश में 7 मार्च 2011 को जैन समुदाय को संविधान के अनुच्छेद 30 के अंतर्गत धार्मिक अल्पसंख्यक घोषित किया गया है। अल्पसंख्यक घोषित होने के बाद जैन समुदाय को शिक्षण संस्थाओं में स्वशासी रूप से कार्य करने की स्वतंत्रता होगी तथा राज्य सरकार द्वारा अल्पसंख्यक समुदायों की सुविधाओं को समाज प्राप्त कर सकेगा।

हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 2011 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण।

जो महानुभाव शिविर का लाभ लेने हेतु जयपुर पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें ताकि आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127